14 जहाँनारा

बादशाह शाहजहाँ का एक बेटा दारा महल ही नहीं, राजधानी से भी भाग खड़ा हुआ। दूसरे बेटे औरंगज़ेब ने उन्हें लाचार और बेबस करके हिंदुस्तान की बादशाहत पर कब्ज़ा कर लिया। तब वयोवृद्ध और लगभग कैदी जीवन जीने पर मजबूर शाहजहाँ की सेवा-सुश्रुषा को समर्पित हुई उनकी बेटी जहाँनारा। उसी के त्याग और बलिदान की वजह से शाहजहाँ के जीवन के अंतिम दिन चैन से बीत सके।

पात्र :	**शाहजहाँ**	**जहाँनारा**	**औरंगज़ेब**	**औरंगज़ेब का बेटा**
	नकीब	**सूत्रधार**	**दासियाँ**	**सेवक**
	सैनिक	**कुछ दरबारी**		

दृश्य : 1

(यमुना के किनारे शाही महल का दृश्य। महल में सन्नाटा है। नेपथ्य से तोपों की गड़गड़ाहट और अस्त्रों की झनकार सुनाई दे रही है। शाहजहाँ मसनद के सहारे लेटा है। दासी दवा का पात्र लिए खड़ी है। शाहजहाँ चिंतित है। तोपों की आवाज़ से कभी-कभी चौंक पड़ता है।)

शाहजहाँ : नहीं, नहीं, क्या वह ऐसा करेगा, क्या हमको तख्त-ताऊस से निराश हो जाना चाहिए?

(जहाँनारा का प्रवेश)

जहाँनारा : हाँ, अवश्य निराश हो जाना चाहिए।

(शाहजहाँ सिर उठाता है।)

शाहजहाँ : कौन? जहाँनारा? क्या तुम सच कहती हो?

जहाँनारा : हाँ, जहाँपनाह! यह सच है, क्योंकि आपका अकर्मण्य पुत्र 'दारा' भाग गया और नमकहराम दिलेर खाँ क्रूर औरंगज़ेब से मिल गया। अब किला उसके अधिकार में हो गया है।

शाहजहाँ : लेकिन जहाँनारा! क्या औरंगज़ेब क्रूर है? क्या वह अपने बूढ़े बाप की कुछ इज़्ज़त न करेगा? क्या वह मेरे जीते-जी तख़्त-ताऊस पर बैठेगा?

जहाँनारा : जहाँपनाह, आपके इसी पुत्र वात्सल्य ने आपकी यह दशा की है। औरंगज़ेब एक नारकीय पिशाच है, उसका किया क्या नहीं हो सकता, एक भले कार्य को छोड़कर।

शाहजहाँ : नहीं, जहाँनारा! ऐसा मत कहो।

जहाँनारा : हाँ जहाँपनाह! मैं ऐसा ही कहती हूँ।

शाहजहाँ : जहाँनारा! तुम मेरी कुछ मदद कर सकती हो?

जहाँनारा : जहाँपनाह की जो आज्ञा हो।

शाहजहाँ : मेरी तलवार मुझे दे दो। जब तक वह मेरे हाथ में रहेगी, कोई भी तख़्त-ताऊस न छीन सकेगा।

जहाँनारा : हाँ जहाँपनाह! ऐसा ही होगा।

(जहाँनारा शाहजहाँ की तलवार उसके हाथ में थमाकर एक तरफ़ को खड़ी हो जाती है। शाहजहाँ उठने का प्रयास करता है मगर सफल नहीं हो पाता। वह लड़खड़ाकर गिरने लगता है तो शाहज़ादी जहाँनारा बादशाह को पकड़कर तख़्त-ताऊस के कमरे की ओर ले जाती है।)

दृश्य : 2

(तख़्त-ताऊस पर वृद्ध शाहजहाँ बैठा है। नकाब डाले जहाँनारा पास बैठी है। कुछ सरदार खड़े हैं, नकीब भी खड़ा है। शाहजहाँ के इशारा करते ही वह कुछ कहने के लिए मुँह खोलता है तभी परदे की ओट से एक तलवार मंच पर आती दिखाई देती है। तलवार लगते ही वह एक ओर लुढ़क जाता है। सब चकित होकर देखते हैं। तभी जिरह बख़्तर से लदा हुआ औरंगज़ेब अपनी तलवार को रूमाल से पोंछता हुआ सामने आ खड़ा होता है और बादशाह शाहजहाँ को सलाम करता है। उसके साथ उसका बेटा भी आता है।)

औरंगज़ेब : हुज़ूर की तबीयत नासाज़ सुनकर मुझसे न रहा गया, इसलिए हाज़िर हुआ।

(शाहजहाँ कुछ काँपने-सा लगता है।)

शाहजहाँ : लेकिन बेटा, इतनी खूँरेज़ी की क्या ज़रूरत थी? वह देखो, बुड्ढे नकीब की लाश लोट रही है। उफ़! मुझसे यह नहीं देखा जाता! क्या बेटा, मुझे भी...

(इतना कहते-कहते शाहजहाँ बेहोश होकर तख़्त पर झुक जाता है। यकायक औरंगज़ेब के तेवर बदल जाते हैं, उसकी आवाज़ कड़क हो जाती है।)

औरंगज़ेब : हटाओ उस नापाक लाश को!

(जहाँनारा दौड़कर सुगंधित जल लेकर वृद्ध पिता के मुख पर छिड़कती है। तभी औरंगज़ेब दहाड़ता है।)

औरंगज़ेब : हैं! यह कौन है जो मेरे बूढ़े बाप को पकड़े हुए है?

(फिर शाहजहाँ के मुसाहिबों को लताड़ता है।)

औरंगज़ेब : तुम सब बड़े नामाकूल हो! देखते नहीं, हमारे प्यारे बाप की क्या हालत है और उन्हें अभी भी पलंग पर नहीं लिटाया?

(औरंगज़ेब और वे सब तख्त की ओर बढ़ते हैं। जहाँनारा फुरती से एक हाथ में कटार और दूसरे में शाही मुहर किया हुआ कागज़ निकालकर खड़ी हो जाती है और उन्हें आगे बढ़ने से रोकते हुए कागज़ दिखाती है।)

जहाँनारा : देखो, इस परवाने के मुताबिक मैं तुम लोगों को हुक्म देती हूँ कि अपनी-अपनी जगह पर खड़े रहो, जब तक मैं दूसरा हुक्म न दूँ। इसमें लिखा है 'इस शख्स का सब लोग हुक्म मानो और मेरी तरह इज़्ज़त करो।'

(शहँशाह के लिखे उस कागज़ की ओर देखते ही जहाँनारा के आगे सबके सिर झुक जाते हैं। औरंगज़ेब भी झुक जाता है। कई क्षण तक सब उसी मुद्रा में खड़े रहते हैं। फिर औरंगज़ेब फिर से तनकर खड़ा हो जाता है।)

औरंगज़ेब : गिरफ़्तार कर लो इस जादूगरनी को। यह सब झूठा फ़िसाद है, हम सिवा शाहजहाँ के और किसी को नहीं मानेंगे।

(सब लोग उस औरत की ओर बढ़ते हैं। वह फ़ौरन अपना नकाब उलट देती है। जहाँनारा को पहचानते ही सब फिर सिर झुकाकर पीछे हटते हैं। औरंगज़ेब सिर नीचा करके मन ही मन कुछ बड़बड़ाता है, फिर से दहाड़ने लगता है।)

औरंगज़ेब : कौन, जहाँनारा तुम यहाँ कैसे?

(फिर पलटकर अपने लड़के की तरफ़ देखता है।)

औरंगज़ेब : बेटा! मालूम होता है कि बादशाह-बेगम का दिमाग कुछ बिगड़ गया है, वरना इस बेशर्मी के साथ यहाँ न आतीं। तुम्हें इनकी हिफ़ाज़त करनी चाहिए।

जहाँनारा : और औरंगज़ेब के दिमाग को क्या हुआ है, जो वह अपने बाप के साथ बेअदबी से पेश आया...

(औरंगज़ेब का बेटा फुरती से जहाँनारा के हाथ से कटार झपट लेता है।)

औ. का बेटा : मैं अदब के साथ कहता हूँ कि आप महल में चलें, नहीं तो...

(जहाँनारा गिड़गिड़ाती है।)

जहाँनारा : क्यों औरंगज़ेब! तुम्हें बिलकुल भी दया नहीं आती?

औरंगज़ेब : आती क्यों नहीं है बादशाह-बेगम! जैसे दारा तुम्हारा भाई था, वैसा ही मैं भी तो भाई ही था, फिर तरफ़दारी क्यों?

जहाँनारा : वह तो बाप का तख्त नहीं लेना चाहता था, उनके हुक्म से सल्तनत का काम चलाता था।

औरंगज़ेब : तो क्या मैं वह काम नहीं कर सकता? अब बहस बेकार है। बेगम को चाहिए कि महल में जाएँ।

(जहाँनारा कातर दृष्टि से वृद्ध और मूर्च्छित पिता को देखती हुई शाहज़ादे की बताई राह से महल के भीतर चली जाती है।)

Copyrighted material

दृश्य : 3

(यमुना के किनारे एक महल में शाहजहाँ पलंग पर लेटे हैं और जहाँनारा उनके सिरहाने बैठी हुई है।)

सूत्रधार : जहाँनारा से जब औरंगज़ेब ने पूछा था कि वह कहाँ रहना चाहती है, तब उसने केवल अपने वृद्ध और हतभागे पिता के साथ रहना स्वीकार किया और अब वह साधारण दासी के वेश में अपना जीवन अपने अभागे पिता की सेवा में व्यतीत करती है। अब उसके बदन पर केवल सादे वस्त्र शोभा बढ़ाते हैं। शाहीमहल में चारों ओर शांति का आभास होता है। जहाँनारा ने, जो कुछ उसके पास था, सब सामान गरीबों को बाँट दिया और अपने बहुमूल्य अलंकार भी पहनना छोड़ दिया। अब वह एक तपस्विनी ऋषिकन्या-सी हो गई है।

(यकायक शाहजहाँ लेटे-लेटे आँखें खोलता है।)

शाहजहाँ : बेटी, अब दवा की कोई ज़रूरत नहीं है। यादे-खुदा ही दवा है। अब तुम इसके लिए कोशिश मत करना।

जहाँनारा : पिता जी, जब तक शरीर है, तब तक उसकी रक्षा करनी ही चाहिए।

(शाहजहाँ चुपचाप लेटे हैं। थोड़ी देर तक जहाँनारा दवाई लिए बैठी रहती है, फिर उठकर दवा की शीशियाँ यमुना के जल में फेंक देती है। दवाएँ फेंकने के बाद भी वहाँ से हटती नहीं बल्कि यमुना के प्रवाह को देखते हुए मन ही मन कुछ बुदबुदाने लगती है।)

जहाँनारा : यमुना का प्रवाह पहले जैसा ही है, मुगल साम्राज्य भी तो वैसा ही है। शाहजहाँ जीवित हैं, लेकिन तख्त-ताऊस पर वह नहीं बैठते।

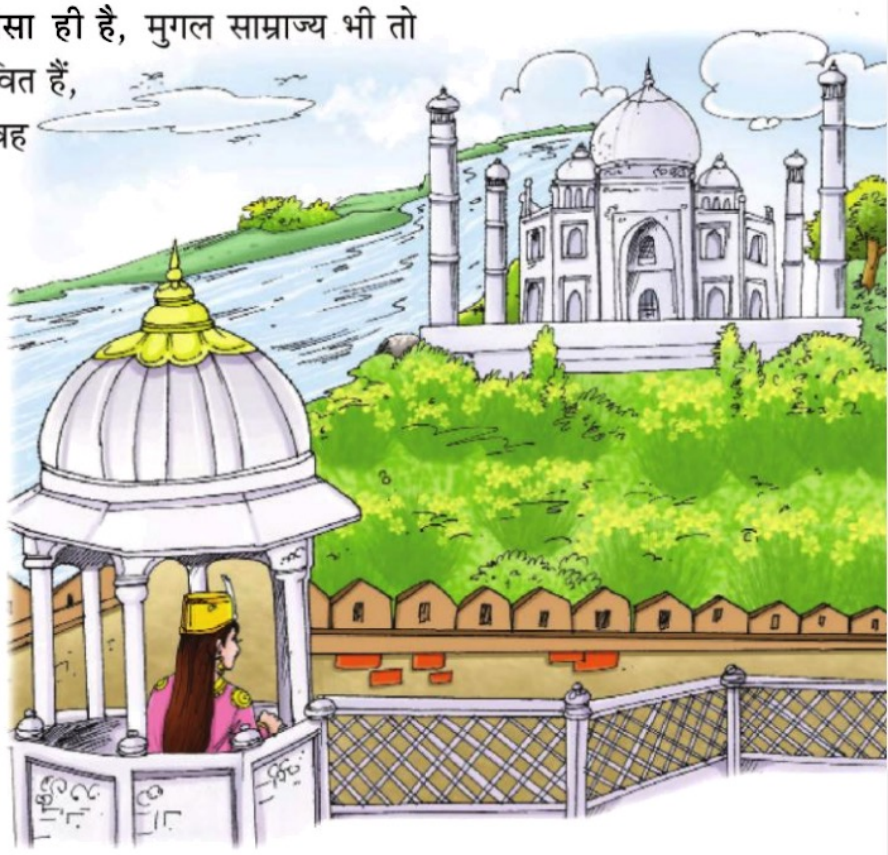

सूत्रधार : शाहज़ादी तपस्विनी हो गई है। उसके हृदय में वह पुराना तेज अब नहीं है, किंतु एक स्वर्गीय तेज से वह कांतिमयी हो आई है। उसकी उदारता पहले से भी बढ़ गई। दीन और दुखी के साथ उसकी ऐसी सहानुभूति थी कि लोग उसे 'मूर्तिमती करुणा'

Copyrighted material

मानते थे। उसकी इस चाल से पाषाण-हृदय औरंगज़ेब भी विचलित हुआ।

(मंच पर सेवकों, दासियों का प्रवेश। जहाँनारा उन्हें उपहार देकर विदा करती है। फिर शाहजहाँ को मंच से नेपथ्य की ओर ले जाती है।)

सूत्रधार : जिसकी सेवा के लिए सैकड़ों दासियाँ हाथ बाँधकर खड़ी रहती थीं, वह स्वयं दासी की तरह अपने पिता की सेवा करती हुई अपना जीवन व्यतीत करने लगी। वृद्ध शाहजहाँ के इंगित करने पर उसे उठाकर बैठाती और सहारा देकर कभी-कभी यमुना के तट पर ले जाती और उसका मनोरंजन करती हुई छाया-सी बनी रहती।

(मंच पर जहाँनारा एक छोर से दूसरे छोर तक टहलती है।)

सूत्रधार : वृद्ध शाहजहाँ ने इहलोक की लीला पूरी की। अब जहाँनारा को संसार में कोई काम नहीं है। केवल इधर-उधर उसी महल में घूमना भी अच्छा नहीं मालूम होता। उसकी पूर्व स्मृति उसे और भी सताने लगी। वह बहुत क्षीण हो गई। बीमार पड़ी। पर, दवा कभी न पी। धीरे-धीरे उसकी बीमारी बहुत बढ़ी और उसकी दशा बहुत खराब हो गई, तब औरंगज़ेब ने सुना। अब उससे भी सह्य न हो सका। वह जहाँनारा को देखने के लिए आया।

दृश्य : 4

(जहाँनारा एक पुराने पलंग पर, जीर्ण बिछौने पर पड़ी है। धीमी साँस चल रही है। तभी वहाँ औरंगज़ेब प्रवेश करता है। जहाँनारा की हालत देखकर उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं। वह जहाँनारा के पलंग के पास ही घुटनों के बल बैठ जाता है।)

औरंगज़ेब : बहन, कुछ हमारे लिए हुक्म है ?

(जहाँनारा ने खुली हुई आँखों को आकाश की ओर उठा दिया।)

सूत्रधार : हमेशा के लिए मुँदने को तत्पर जहाँनारा की आँखों से उस समय एक स्वर्गीय ज्योति निकल रही थी। वह वैसे ही देखती रह गई।

— जयशंकर प्रसाद

की कहानी का नाट्य रूपांतर

Copyrighted material

कथाकार परिचय : जयशंकर प्रसाद का जन्म सन 1889 में वाराणसी में हुआ। हिंदी के अलावा संस्कृत, उर्दू और फ़ारसी का गहन अध्ययन किया। कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध आदि विधाओं में साहित्य सृजन किया। इनके साहित्य में इतिहास, स्वतंत्रता की चाह, सौंदर्य और प्रकृति-प्रेम के स्वर प्रमुख रूप से मिलते हैं। इनकी *कामायनी* को आधुनिक महाकाव्य माना जाता है। अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं : *चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी* (नाटक), *झरना, आँसू, लहर* (काव्य संग्रह), *कंकाल, तितली, इरावती* (उपन्यास) और *पुरस्कार, गुंडा, जहाँनारा, आकाशदीप* आदि कहानियाँ।

अभ्यास—*for* S.A. *and* F.A.

S.A.2

संकलित मूल्यांकन के लिए
for Summative Assessment

शब्दार्थ

मसनद – गद्दी, बड़ा तकिया; **तख्त-ताऊस** – शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया सिंहासन जिसपर एक रत्नजड़ित मोर बादशाह के सिर पर छाया किए रहता था; **अकर्मण्य** – बिना कर्म के, निकम्मा आलसी; **अश्रुजल** – आँसुओं का जल; **वात्सल्य** – बच्चों के प्रति प्रेम; **जिरहबख्तर** – कवच; **नासाज़** – अस्वस्थ; **खूँरेज़ी** – खून-खराबा; **नापाक** – अपवित्र; **मुसाहिब** – किसी बड़े आदमी के साथ उठने-बैठनेवाले, पार्षद; **नामाकूल** – बेकार के; **परवाना** – हुक्मनामा, निर्देश; **फ़िसाद** – दंगा, लड़ाई; **हतभागे** – दुर्भाग्यशाली; **व्यतीत** – बिताना; **कांतिमयी** – चेहरे का तेज; **इंगित** – इशारा, संकेत; **जीर्ण** – फटा हुआ

पाठ-बोध

मौखिक

प्रत्येक 1 अंक

1. शाहजहाँ का औरंगज़ेब और जहाँनारा से क्या संबंध था?
2. जहाँनारा के हाथ में कौन-सा कागज़ था? उसपर क्या लिखा था?
3. औरंगज़ेब भी फ़रमान को सुनते ही क्यों झुक गया?
4. जहाँनारा ने किसके साथ रहना पसंद किया और क्यों?
5. तख्त-ताऊस के विषय में आप क्या जानते हैं? M.I. *4 अंक*

Skills/Learning on this Page: • **Word Power** • **Verbal Expression** – recall, reasoning, differentiating • M.I.
• **जीवन-मूल्य** – मुगल इतिहास, पितृ-भक्ति, स्त्री-शक्ति, कर्तव्यनिष्ठा

Copyrighted material